Read India
An imprint of Pratham Books

# नौका विहार

जयश्री देशपांडे
मोनप्पा

RGF Pratham
SERIES

Original Story (*Kannada*) Doni Vihara by Jayashree Deshpande
© Rajiv Gandhi Foundation – Pratham Books, 2005

Second Hindi Edition: 2008

Illustrations & Design: Monappa
Hindi Translation: K. Vijaya

ISBN : 81-8263-143-2

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices: Mumbai ✆ 022-65162526 and New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, Delhi

Printed by: Manipal Press, Manipal

Published by:
Pratham Books
www.prathambooks.org

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced or distributed in any form or by any means,
or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of the publisher.

# नौका विहार

लेखन : जयश्री देशपांडे

चित्रांकन : मोनप्पा

हिन्दी अनुवाद : के. विजया

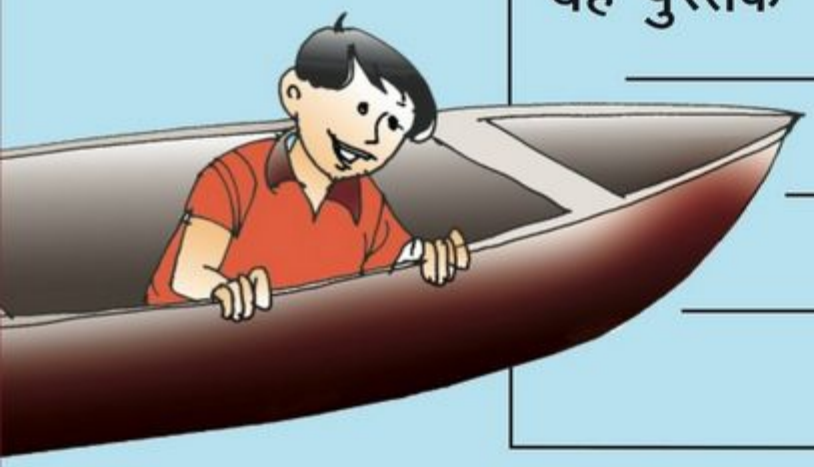

यह पुस्तक

_____

_____

_____

की है।

राजू को नदी बहुत प्रिय है। दादा-दादी के यहाँ आने के बाद वह रोज़ उनके साथ नदी किनारे जाता है। दादी के शहर में श्यामला नदी का पानी बहुत शुद्ध और ठंडा है। उसके तट पर साफ़ और हल्के पीले रंग का बालू फैला हुआ है। और कुछ हिस्सों में बड़े-बड़े पत्थर और सीढ़ियाँ हैं।

नदी किनारे सैकड़ों तरह के
पेड़ पौधे हमेशा पानी मिलने
की वजह से हरे भरे रहते हैं।
वह बहुत सुन्दर लगते हैं।
कुछ पेड़ों पर तरह-तरह के
फूल खिलते हैं।

दादी ने कहा, ''आज शाम को हम नदी किनारे चलेंगे।''
यह सुनकर राजू बहुत खुश हुआ। दादाजी ने कहा,
''हाँ, वहाँ हम राजू को नाव में बिठा कर नदी में
सैर कर सकते हैं।'' उन्होंने राजू से पूछा,
''तुम्हें नाव में बैठकर सैर करना पसन्द है न!''
राजू ने झट से कहा, ''हाँ दादा जी!''

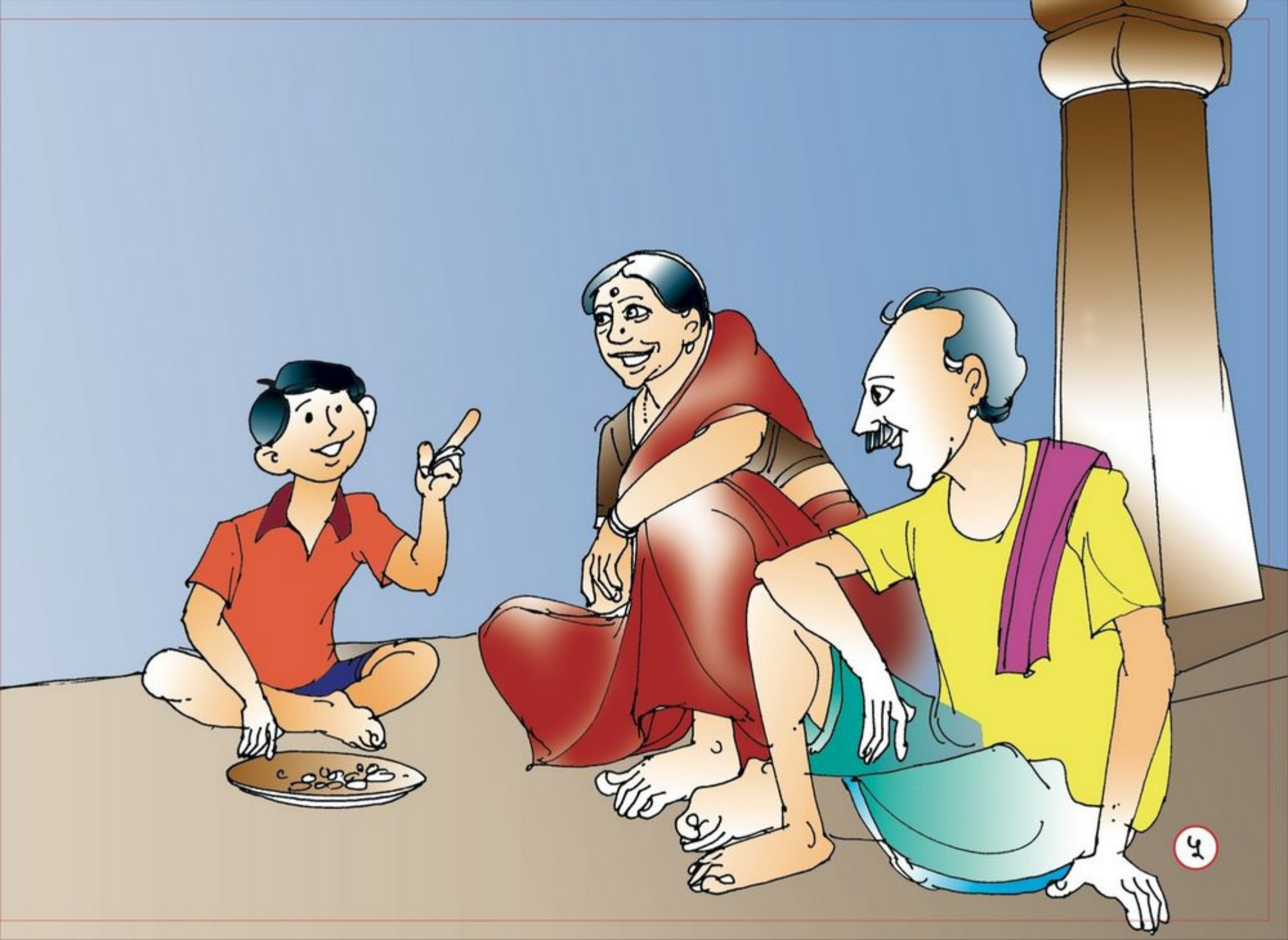

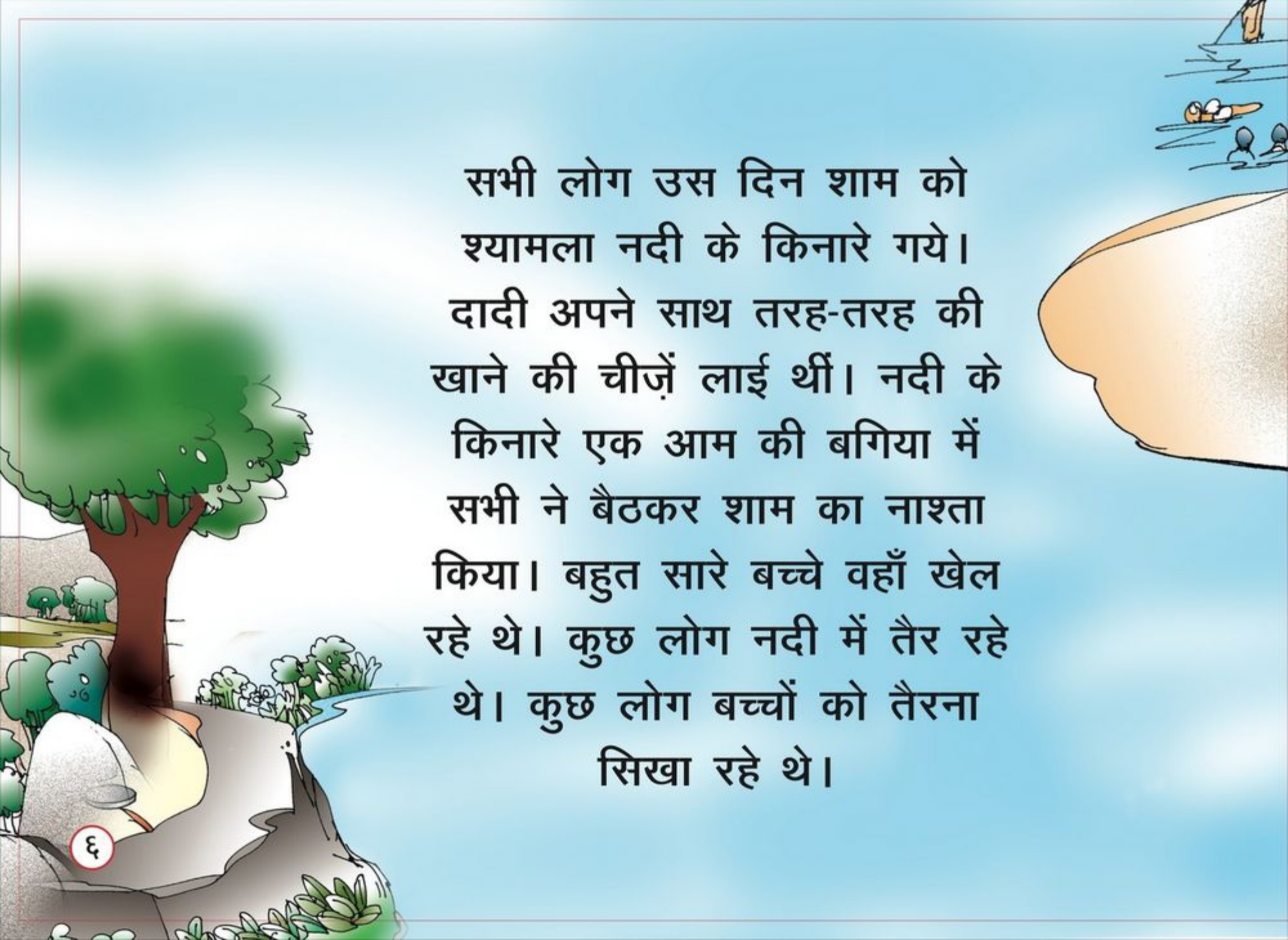

सभी लोग उस दिन शाम को श्यामला नदी के किनारे गये। दादी अपने साथ तरह-तरह की खाने की चीज़ें लाई थीं। नदी के किनारे एक आम की बगिया में सभी ने बैठकर शाम का नाश्ता किया। बहुत सारे बच्चे वहाँ खेल रहे थे। कुछ लोग नदी में तैर रहे थे। कुछ लोग बच्चों को तैरना सिखा रहे थे।

वे बच्चे अपने पीठ पर एक लम्बा सा सफ़ेद फल बाँधे हुए थे। उसे देखकर राजू ने कहा, ''वो क्या है दादा जी?''

''ये लौकी के खोल हैं। लौकी को पूरी तरह सुखाकर उसके अन्दर के गूदे को निकाल कर उसे पोला बनाया जाता है।

ये पानी में तैरते हैं और डूबने का डर
नहीं रहता। इन्हें पीठ पर बाँध कर बच्चे
आसानी से तैरना सीख लेते हैं।''
दादाजी ने राजू को काम की बात बताई।
राजू ने कहा, ''तो फिर क्या मैं यहाँ
तैरना सीख सकता हूँ? मेरी बड़ी इच्छा है
कि मैं तैरना सीखूँ।''

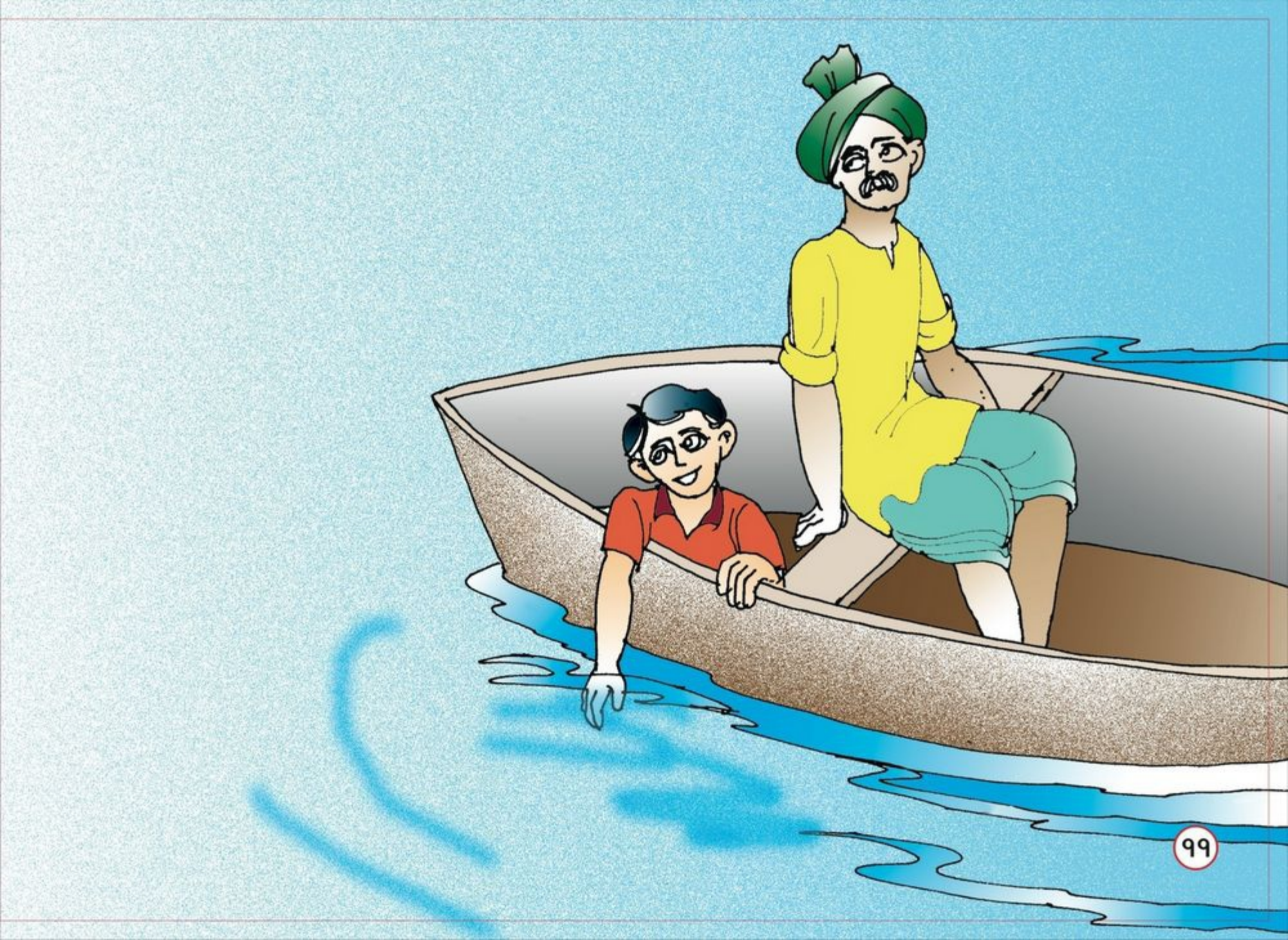

दादा जी ने कहा, ''ऐसा
ही करो, यहाँ तुम
लौकी के खोल बाँधकर
तैरना सीखो। तुम कल
से ही आ सकते हो।''
राजू को खुशी हुई कि
जब तक वह छुट्टी
बिताकर अपने शहर
वापस जायेगा वह तैरना
सीख लेगा।

इसके बाद वे नदी में खड़ी
नावों के पास गये।
वहाँ कुछ मल्लाह बैठे हुए थे।
दादा जी ने बताया
कि नदी में नाव चलाने वाले
को मल्लाह कहते हैं।

मल्लाह से बात करके सभी नाव पर सवार हुए। पानी में डोलती हुई नैया पर चढ़ते समय राजू को पहले थोड़ा-सा डर लगा। दादाजी ने उसे बाँह पकड़ कर सहारा दिया और नाव में बिठाया। जब नाव पानी में आगे बढ़ने लगी तब राजू का सारा डर भाग गया और उसे बड़ा मज़ा आया। नाव के दोनों तरफ़ पानी की लहरें धीरे-धीरे टकरा रही थीं।

छप-छप की आवाज़ आ रही थी। नदी का पानी एकदम शांत था। वहाँ पानी का बहाव तेज़ नहीं था। पानी के अन्दर से छोटी-छोटी मछलियाँ हल्की-सी ''छपाक'' के साथ ऊपर उचकतीं फिर पानी में खो जाती थीं। मल्लाह गाना गाते हुए दोनों हाथों से पतवार चलाते नाव को आगे बढ़ा रहे थे। राजू ने एक तरफ़ झुक कर पानी में अपना हाथ छुआया तो पानी की ठंडक उसे बड़ी अच्छी लगी। हल्की हवा भी चल रही थी। यहाँ-वहाँ पानी की घास उगी हुई दिखाई दे रही थी। यह नज़ारा राजू को बहुत पसंद आया।

दादा जी ने पूछा, ''राजू, कैसी है, नाव की सवारी?''
राजू ने मुस्करा कर कहा, ''बहुत अच्छी,
दादा जी ! बहुत ही अच्छी !''
''तुम जब वापस शहर जाओगे तो अपने दोस्तों को
इस नौका विहार के बारे में ज़रूर बताना।''
जब दादा जी ने यह कहा तो राजू हँसते हुए बोला,
''दादाजी मैं सिर्फ़ दोस्तों को नहीं,
अपनी टीचर को भी बताऊँगा।''

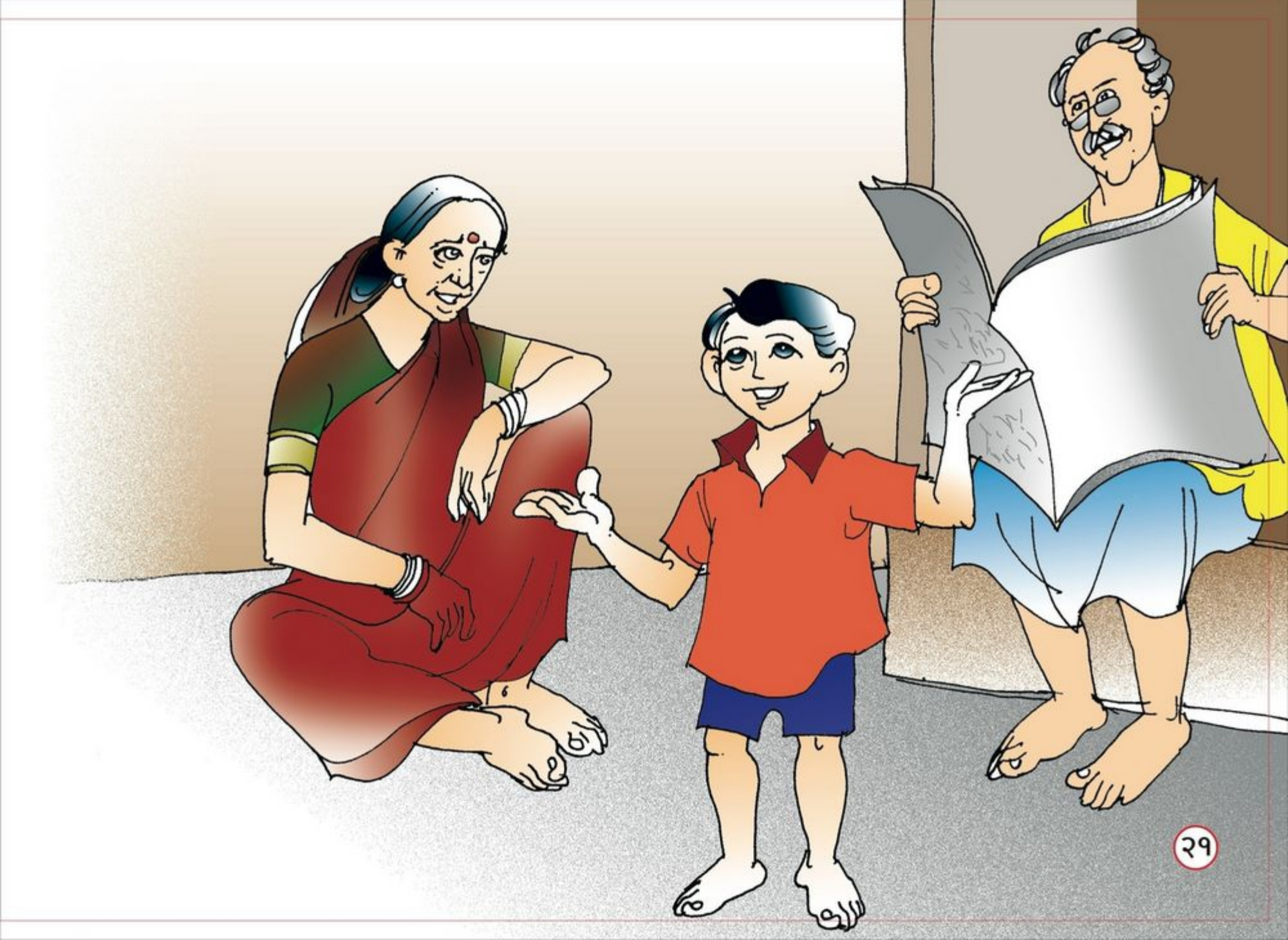

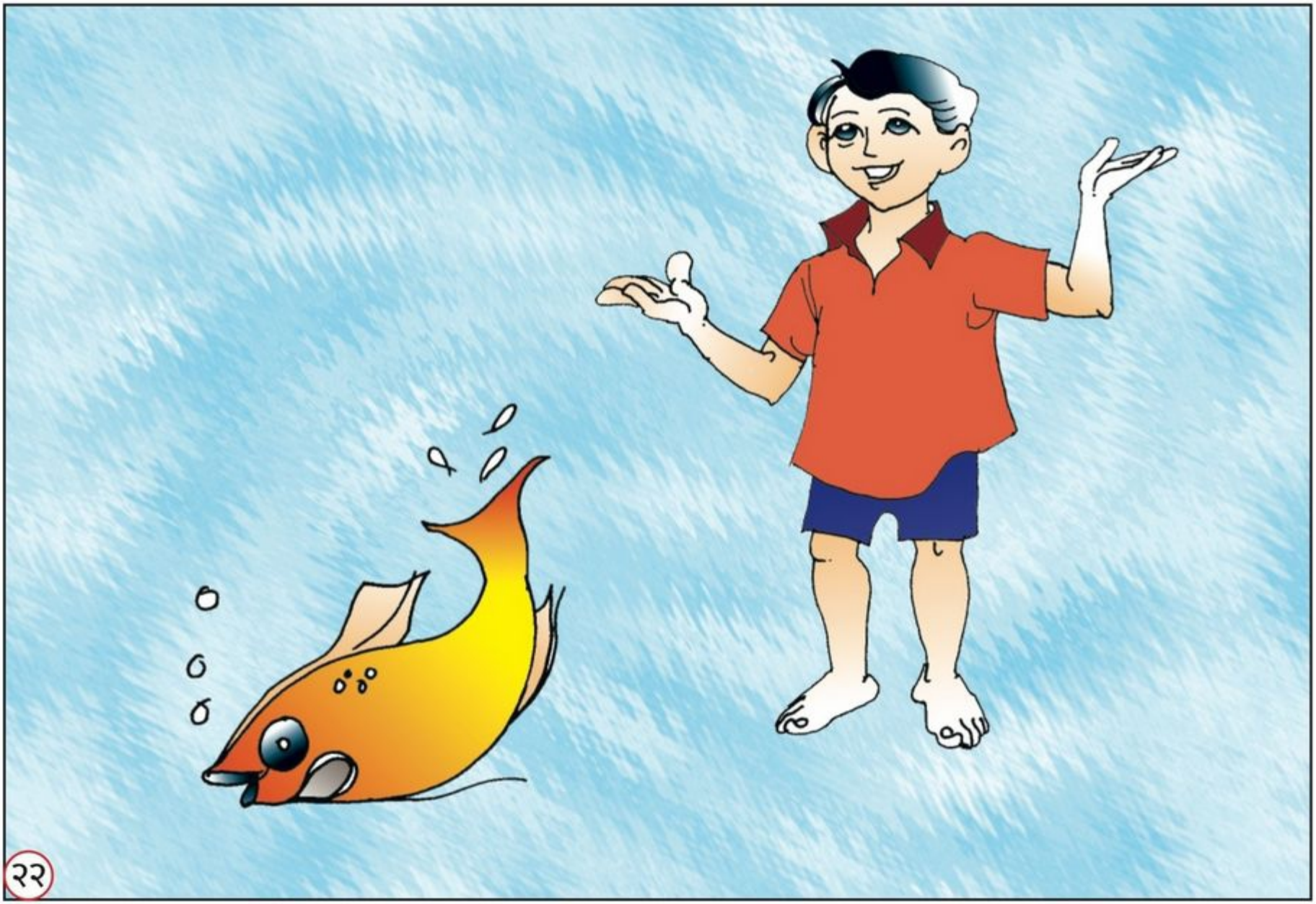

इस चित्र में रंग भरो।

इस चित्र में रंग भरो।

मैं अंकित हूँ। सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और बड़ा होकर वकील बनना चाहता हूँ क्योंकि न्याय सबके लिये बराबर है। डिस्को डाँस और क्रिकेट में कभी पीछे नहीं रहता।
यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

जयश्री देशपाण्डे ने कन्नड़ में बहुत सी लघु कथाएँ, निबन्ध, हास्य लेख व उपन्यास लिखे हैं। वे पन्द्रह वर्षों से लिखती आ रही हैं और उनकी कहानियाँ सभी मुख्य कन्नड़ पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। उन्होंने अमेरिका व यूरोप में यात्रा करी है और उन्हें यात्रा वृत्तान्त लिखना भी अच्छा लगता है। उन्हें यात्रा, फ़ोटोग्राफ़ी व साहित्य में रुचि है।

मोनप्पा एक चित्रकार हैं जिन्होंने कई कन्नड़ प्रकाशकों के साथ काम किया है। बीस साल तक नौकरी करने के बाद उन्होंने अपना कला स्टूडियो शुरू किया। वे कई मीडिया संस्थाओं व पुस्तक प्रकाशकों के लिये काम कर रहे हैं।

दादा और दादी से मिलने गाँव जाना राजू को बहुत अच्छा लगता है। इस बार, वे सब शाम को नदी के किनारे घूमने निकले और फिर नौका की सैर करी। तुम भी उनके साथ सैर पर निकल पड़ो...

**इस शृंखला की अन्य पुस्तकें**

राजू और तरकारी • मछली ने समाचार सुने • गौरैया और अमरूद
रंग बिरंगी सुंदर मछली • कौए के रिश्तेदार • कुहू–कुहू कोयल
कछुआ और खरगोश • स्वाद अनार का • बुलबुलों वाला फेनीला दूध

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये **www.prathambooks.org** पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

**PRATHAM BOOKS**

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा संस्था है।

ISBN 818263143-2

9 788182 631434

Age Group: 7-10 years
Nauka Vihar (Hindi)
MRP: Rs. 20.00